□□□□ □□□□□□□

जनसत्ता 9 जून, 2014 : यह □क तथ्य के रूप में ही नहीं दोहराया जा रहा है कि 1984 के बाद 2014 में ही दिल्ली की गद्दी के लि□

किसी □क पार्टी को बहुमत मिला है, बल्कि इसके राजनीतिक आयाम भी अलग नहीं हैं□ 1984 में हिंदुत्ववाद के उभार की □क चरम स्थिति थी, जब राजीव गांधी को दो तिहाई बहुमत मिला था□ वह राजनीतिक हिंदुत्ववाद सिख-विरोधी हमलों की उपज था, जो लगातार कई वर्षों तक जारी रहने के बाद इंदिरा गांधी की हत्या के रूप में □क प□ाव पर पहुंचा था और फिर आम सिख समुदाय पर हमले को सत्ता द्वारा जायज ठहराने की कोशिश की गई□ यह महज संयोग नहीं कि तब राजीव गांधी ने न्यूटन की गति के सिद्धांत का जो वाक्य सिख-विरोधी हमले से पहले दोहराया था वही वाक्य गोधरा में साबरमती □क्सप्रेस में आगजनी की घटना के बाद गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी ने भी दोहराया□ 2002 में गुजरात में हु□ मुसलिम विरोधी हमलों के बाद राजनीतिक हिंदुत्ववाद का उभार अपने वास्तविक नेतृत्व की तलाश में रहा है□

इस बार के लोकसभा चुनाव परिणाम ऐसे पहले चुनाव परिणाम हैं जिनकी समीक्षा और विश्लेषण तत्काल संभव नहीं दिखते हैं□ बौद्धिक समाज का ब□ा हिस्सा इस तरह के चुनाव नतीजों के ठीक-ठीक विश्लेषण करने की क्षमता से जिस तरह चुकता गया है, उसके कारण स्पष्ट हैं□ उनके विश्लेषण के तौर-तरीके पुराने प□ ग□ हैं□ जान-बूझ कर विश्लेषण के पुराने तौर-तरीके इस्तेमाल में ला□ जा रहे हों या यह बौद्धिक क्षमता के चुक जाने का मामला हो, इस पर चर्चा यहां अप्रासंगिक हो सकती है□ तौर-तरीके जिस तरह के रहे हैं उन्हें समझने के लि□ □क उदाहरण के रूप में इस प्रसंग की यहां चर्चा की जा रही है□

1984 में जब लोकसभा चुनाव के नतीजे आ□ तो यह माना गया कि देश में राजनीतिक हिंदुत्ववाद का नेतृत्व करने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसके संसदीय मंच भारतीय जनता पार्टी का प्रभाव कम हो गया है, क्योंकि वह तब आज की कांग्रेस से भी बदतर हालत में पहुंच चुकी थी□ इससे पहले 1971 में 'दुर्गावतार' के रूप में इंदिरा गांधी को चुनाव में बहुमत से ज्यादा सीटें मिली थीं, लेकिन 1974 में भ्रष्टाचार और तानाशाही विरोधी आंदोलन के भीतर घुस कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी ताकत कई गुना ज्यादा ब□ा ली और सत्ता की नीतियों को प्रभावित करने की स्थिति में पहुंच गया□ राजीव गांधी की सरकार के खिलाफ चले भ्रष्टाचार-विरोधी आंदोलन में भी अपनी पैठ जमा कर भाजपा सत्ता पर सीधे दबाव बनाने की स्थिति में पहुंच गई□ तब विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार को, वामदलों की तरह, उसका बाहर से समर्थन था□

कोई भी व्यवस्था समाज में विश्लेषण करने की □क पद्धति विकसित कर देती है□ लेकिन वह हमेशा उस व्यवस्था और सत्ता के लि□ ही उपयोगी हो सकती है□ समाज के वास्तविक भविष्य की थाह के लि□ अलग मानकों और विश्लेषण की अलग पद्धति की जरूरत होती है□ संसदीय व्यवस्था में सीटों की संख्या से सरकार के बनने-बिग□ने के खेल का तो विश्लेषण किया जा सकता है, लेकिन उससे समाज में राजनीतिक विचारधारा और उसके विस्तार का सही अनुमान नहीं लगाया जा सकता□ भाजपा को दो सीटें जरूर मिलीं, लेकिन राजनीतिक हिंदुत्ववाद की विचारधारा का विस्तार 1984 में सिख-विरोधी हमलों के रूप में इस तरह से हो गया था कि यह ब□ से ब□ जनसंहार को अंजाम देने में सक्षम साबित हो सकती है□ विचारधारा के हितैषी विश्लेषक बुनियादी तौर पर इस बात को लेकर आश्वस्त रहते हैं कि विचारधारा के विस्तार का उत्तराधिकारी आखिरकार उनका मूल संगठन ही हो सकता है□

सीटों की संख्या चाहे जसि पार्टी की ब□-घटे, संघ के प्रमुख यह कहने में हचिक्ते नहीं हैं कि उनकी वचिारधारा और उसके प्रतनिधियिों की पैठ हर पार्टी और संगठन में है□ संघ की गतविधियिों का इतहिास देख लें□ उसने अपने वचिारधारात्मक संगठन का लगातार वस्तिार कयिा है□ उसके वस्तिार का सही रूप केवल संसद में उसकी □क संसदीय पार्टी की सीटों की संख्या का ब□ने या शाखाओं की संख्या के ब□ने-घटने से नहीं आंका जा सक्ता□ उसका उद्देश्य यह रहा है कि वह संसदीय व्यवस्था की तमाम पार्टयिों के भीतर हदिुत्ववाद की □क प्रतस्पिर्धा पैदा करे□ पछि□ो के लि□ सरकारी सेवा में आरक्षण के फैसले के बाद 1991 से उसने अपनी सोशल इंजीनयिरगि के तहत यह सतत कोशशि की और ब□ी हद तक कामयाबी भी हासलि की, जैसी कि पहले आरक्षण-वरिोधी आंदोलन के बाद उसने गुजरात में हासलि की थी□

किसी भी संसदीय पार्टी को आप देख सक्ते हैं, जहां हदिुत्ववाद के प्रत झुक्ाव नहीं पैदा हुआ हो□ आजतक चैनल पर नरेंद्र मोदी के खास सहयोगी अमति शाह और कांग्रेस के जयराम रमेश के साथ □क ही समय में हुई बातचीत को यहां उद्धृत कयिा जा रहा है□

गुजरात में सांप्रदायकि हमलों के बाद नरेंद्र मोदी दो बार वधिानसभा का चुनाव जीत चुके थे□ अमति शाह से पूछा जा रहा था कि उन्हें मुसलमि उम्मीदवार क्यों नहीं मलि रहे हैं? शाह को यह सवाल परेशान नहीं कर रहा था□ लेकनि जयराम रमेश से जब पूछा गया कि पछिले चुनाव के मुक्ाबले वे कम मुसलमि उम्मीदवार क्यों चुनाव मैदान में उतार रहे हैं तो उनके जवाब से उनकी परेशानी स्पष्ट हो रही थी□ उन्होंने कहा कि गुजरात में सांप्रदायकि दंगों के बाद वोटो का जो ध्रुवीकरण हुआ है उससे किसी मुसलमि उम्मीदवार का जीतना काफी कठनि हो गया है□ हम उम्मीदवार जीतने के लि□ ख□ करते हैं□

संसदीय पार्टयिों के बीच राजनीतकि हदिुत्ववाद की प्रतस्पिर्धा पैदा करने में संघ की गतविधियिां महत्त्वपूर्ण साबति हुई हैं□ संघ की नीतयिों ने दो काम कि□ हैं□ □क तो सभी राजनीतकि पार्टयिों और नेताओं को भाजपा और भाजपा नेताओं के साथ सत्ता में हस्सिेदार बना कर संसदीय पार्टयिों की धर्मनरिपेक्षता के खोखलेपन को उजागर कयिा है□ उसकी वचिारधारा के लि□ यह सबसे महत्त्वपूर्ण बात है□ धर्मनरिपेक्षता से सबसे ज्यादा खतरा किसी भी धर्म आधारति राजनीतकि वचिारधारा को ही हो सक्ता है□ इसीलि□ बार-बार इस धर्मनरिपेक्षता को वे छद्म कहते रहे हैं□ दूसरा महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि जो सीधे प्रतस्पिर्धा में नहीं उतरे वे प्रकारांतर से हदिुत्ववाद की राजनीति के शकिार हो ग□□ भारत में किसी भी धर्म की तरफ राजनीति को जो□ने का अर्थ हदिुत्ववाद की राजनीति का शकिार होने के अर्थ में ही अभव्यिक्त होता है□ पश्चमि बंगाल में वामदलों की सरकार के दौरान तसलीमा नसरीन को नकिाले जाने की घटना इसी तरह की प्रतस्पिर्धा में शामलि होने के □क स्पष्ट उदाहरण के रूप में सामने आया□

कांग्रेस के बारे में यह स्पष्ट आकलन रहा है कि वह हदिुत्ववाद के गहरे असर में रही है□ अंतरराष्ट्रीय राजनीतकि स्थतियिां और भारतीय समाज की स्थति और वभिन्नि आंदोलनों से उपजी चेतना की स्थति से हदिुत्ववाद की □क मात्र पार्टी के रूप में उसके ख□ होने का लाभ उसे नहीं हो सक्ता था□ वह केवल हदिुत्ववाद की तरफ झुक्ाव का प्रदर्शन कर सक्ती थी□ संघ के □क प्रवक्ता राकेश सन्हिा □नडीटीवी इंडया पर ठीक ही कह रहे थे कि भाजपा और संघ कभी नहीं चाहेंगे कि कांग्रेस खत्म हो□ संसदीय पार्टयिों में हदिुत्ववाद की प्रतस्पिर्धा पैदा करने का □क माध्यम कांग्रेस ही रही है□ कांग्रेस राजनीतकि हदिुत्ववाद को अपनी संसदीय सत्ता को बना□ रखने के □क औजार के रूप में इस्तेमाल करती रही है जसिे नरम हदिुत्ववाद भी कहा गया है□

राजनीतकि हदिुत्ववाद के वस्तिार पर भी गौर करें□ □क राजीव गांधी का दौर था जब समय से पहले उन्हें देश को इक्कसवीं सदी में ले जाना था- धर्मनरिपेक्ष, समतामूलक और लोकत्तांत्रकि वचिारधाराओं की कीमत पर□ वैसा ही दूसरा समय दस वर्षों के उस दौर में आया, जब मनमोहन सहि ने दुनिया की सबसे ब□ी ताक्त के रूप में देश को स्थापति करने का □लान कयिा□ वचिारधारा के तौर पर केवल राजनीतकि हदिुत्ववाद उन कालों में सक्रयि रहा, जब कांग्रेस की सत्ता होने के बावजूद उसकी कार्यशैली और व्यवहार राजनीतकि हदिुत्ववाद से भन्नि कुछ नहीं था□ वचिारधाराओं और लोकत्तांत्रकि अधकिारों पर हमलों में घोषति तौर पर हदिुत्ववादी और कांग्रेसी □क साथ दखिने लगे□

वर्ष 1984 में जो चुनाव नतीजे सामने आ□ वे 2002 के बाद तत्काल नहीं आ सक्ते थे□ दरअसल, 2014 के चुनाव नतीजों की समीक्षा पछिले कसिी □क चुनाव की समीक्षा जैसी नहीं हो सक्ती□ इस परणिाम को तीस वर्षों की राजनीतक गितविधियिों के साथ ही वश्लिेषति कयिा जा सक्ता है□

सन 2002 के बाद चुनाव नतीजे गुजरात में पहले की ही तरह आ□, लेकनि पूरे देश में हदिुत्ववाद की शुरू की गई सोशल इंजीनयिरगि की प्रक्रयिा चल रही थी□ सामाजकि न्याय की वचिारधारा को जातवािद में परवर्तति करने और सामूहकि चेतना को जातयिों में खंडति करने और उसके □क ब□ हस्सिे को राजनीतकि हदिुत्ववाद की चेतना में ढालने की प्रक्रयिा आसान नहीं हो सक्ती थी□ मुसलमि-वरिोध हदिुत्ववाद की चेतना का प्रमुख आधार रहा है□ वर्ष 1991 में धार्मकि और उसके बाद आतंकवाद की आ□ में हदिुत्ववाद को वसि्तारति करने के रास्ते तैयार होते रहे हैं□

सामाजकि न्याय की वचिारधारा के वसि्तार के बजाय दमति-पी□ति जातयिों की संख्या गनिने में संसदीय पार्टयिां लगी रहीं और वचिारधारा के स्तर पर सुबह-शाम उनका राजनीतकि हदिुत्वीकरण कयिा जाता रहा□ जनसंचार के माध्यमों ने अपनी पूर्व की भूमकिा को और सक्रयि कयिा और वचिारधाराओं के स्थगन की स्थति में उन्होंने □क तरह से लोगों का मन-मजिाज बनाने वाली □कमात्र मशीन के रूप में खुद को स्थापति कर लयिा□ इस पूरी प्रक्रयिा में 2002 के चुनाव नतीजों में तब्दील होने में इतने वर्ष लग ग□□

वास्तव में 2014 के चुनाव नतीजे 1984 जैसी पृष्ठभूमि के ही देर से आ□ नतीजे हैं□ यह दोहराव ही नतीजों का वास्तवकि वश्लिेषण है□ लेकनि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की यात्रा लंबी है□ रांची के □क दोस्त उपेंद्र के रूपक का इस्तेमाल कयिा जा□ तो उनके अनुसार पहले के चुनाव से इस रूप में अंतर आया है कि सात में से तीन उन लोगों ने भाजपा के पक्ष में वोट दयिा जो पछि□ और दलति हैं□ राजनीतकि हदिुत्वीकरण के तौर-तरीकें और उसकी प्रक्रयिा की पहचान की अपनी क्षमता लोकतांत्रकि, धर्मनरिपेक्ष और समतामूलक राजनीतकि वचिारधाराओं के नेतृत्वकारी लोग गंवा रहे हैं□ जबकि यह वचिारधारात्मक संघर्ष का दौर है□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि□ क्लकि करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्वटिर पेज पर फॉलो करने के लि□ क्लकि करें- https://twitter.com/Jansatta